गांधी का मध्यप्रदेश

- डॉ. रामदीन त्यागी

नौ जनवरी 1915 को जब अरबिया जहाज ने मुंबई के अपोलो बंदरगाह को छुआ, उस समय साबरमती के संत की उम्र महज 45 वर्ष थी। वे लगभग 12 वर्षों तक वकालत की डिग्री लेने अपने वतन से दूर रहे थे। उन्हें अपनी जन्मभूमि के दर्शन नहीं हो पाये थे। गांधी जब जहाज से नीचे उतरे तो उनसे मिलने आये ब्रिटिश अफसरों एवं अन्य लोगों की पोषाक पूरी तरह से राजसी ठाठ-बाठ की थी, जबकि गांधी जी एक लम्बा कुर्ता धोती और पगड़ी पहने हुए थे। उस जमाने में अपोलो बंदरगाह पर ब्रिटिश सरकार के खास आदमियों और राजा-महाराजाओं को ही उतरने की अनुमति दी जाती थी, लेकिन फिरोजशाह मेहता, वी.जी. हॉरलेन, गोपालकृष्ण गोखले की विशेष सिफारिश पर महात्मा गांधी को यहां उतरने की अनुमति प्रदान की गई थी। दक्षिण अफ्रीका में अपने लम्बे प्रवास के बाद भारत लौटे महात्मा गांधी ने जहाँ एक ओर स्वाधीनता आंदोलन के लिए कई सत्याग्रह किए वहीं दूसरी ओर भारत के कोने-कोने में यात्राओं के जरिए जनमानस को गुलामी के खिलाफ आंदोलित करने का करिश्माई प्रयास किया।

इन्हीं यात्राओं के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी मध्यप्रदेश की धरती पर कई बार आये। गांधी जहाँ-जहाँ गए वहाँ आज भी उनकी यादें जुडी हुई हैं। बापू की यात्रा ऐतिहासिक होने के साथ ही जनमानस के किस्से-कहानी और किवदन्तियों से आज भी यादों में है। आइये, हम आपको गांधी जी की मध्यप्रदेश यात्राओं के बारे में बताते हैं-

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी 28 मार्च 1918 को पहली बार मध्यप्रदेश के दौरे पर इंदौर आये। उन्होंने चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद के बाद इंदौर में जनसभा को संबोधित किया। यहाँ से स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी युग का सूत्रपात्र हुआ। जो 1919 के बाद का काल माना जाता है। वे इक्कीस वर्ष अफ्रीका में रहकर भारत में लौटे थे। उसी दरमियान इंदौर की यह यात्रा हुई। गांधी जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सभापति के रूप में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रभावी पहल की और जनमानस को इस ओर प्रेरित किया। 28 मार्च को जब गांधी जी इंदौर पहुंचे थे, तब जनता पलक-पावड़े बिछाकर उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। हजारों की संख्या में स्वयं सेवक और दर्शनार्थी गांधी जी की प्रतीक्षा में थे। बताते हैं कि गांधी जी रेल के तीसरे दर्जे के डिब्बे में यात्रा करते थे। उनका मानना था कि यदि भारत को पहचानना है तो तृतीय श्रेणी में ही यात्रा करना चाहिए। जब गांधी जी इंदौर स्टेशन पर उतरे तो लोग उनकी सादगी को देखकर हतप्रभ रह गये। यहाँ तीन दिवसीय यात्रा के दौरान एक रोचक वाक्या हुआ। इस वाक्ये में गांधी जी के प्रति आदर रखने वाले लोगों ने एक अनूठी मिसाल पेश की। गांधी जी के मना करने के बावजूद उनकी बग्घी के घोड़ों को अलग कर दिया और खुद उनके अनुयायियों ने गांधी जी की बग्गी को खींचकर गंतव्य तक पहुंचाया। यह दृश्य भावविह्ल करने वाला था।

गांधी जी की दूसरी मध्यप्रदेश यात्रा राज्य के तात्कालीन जिले रायपुर, धमतरी, कंड़ैल व कुरूद अंचल में 20 व 21 दिसम्बर 1921 में हुई। इस यात्रा में उन्होंने कंड़ैल नहर सत्याग्रह आजादी के आंदोलन एवं सत्याग्रह हेतु जनमत संग्रह का कार्य किया। कंड़ैल अविभाजित मध्यप्रदेश का पहला ऐसा गांव था (जो अब छत्तीसगढ़ का अंग है), जहाँ गांधी जी ने सत्याग्रहियों को आशीर्वाद दिया था। इसके बाद गांधी जी की तीसरी यात्रा 6 जनवरी 1921 को छिंदवाड़ा में हुई। जहाँ पर गांधी जी ने आम जन को सत्याग्रह के लिए जनमत संग्रह करने का आव्हान किया। उनकी चौथी मध्यप्रदेश यात्रा सिवनी-जबलपुर में 20 एवं 21 मार्च 1921 को हुई।

बापू हिन्दी के वरिष्ठ कवि एवं स्वतंत्रता सेनानी पंडित माखनलाल चतुर्वेदी से बेहद स्नेह करते थे, वे उनके आग्रह पर मई 1921 में खण्डवा पहुंचे। यह उनकी पांचवीं मध्यप्रदेश यात्रा थी। माखनलाल चतुर्वेदी के साथ महात्मा गांधी ने खण्डवा में विभिन्न आयोजनों में भाग लिया। इस दौरे के बाद गांधी जी की यात्रा की मांग भोपाल और सांची से भी उठने लगी। आंदोलनकारियों ने बापू को आमंत्रण भेजा। जिस पर वे छंठवी बार सितम्बर 1929 में

भोपाल और सांची पधारे। यहाँ एक छोटी बालिका को अँगूठी दान देने का दिलचस्प प्रसंग हुआ। जो महात्मा गांधी के जीवन से जुड़े 150 रोचक प्रसंग के संकलन में भी शामिल है। भोपाल यात्रा के दौरान महात्मा गांधी के लिए भोपाल नबाब द्वारा अहमदाबाद पैलेस के समीप एक शानदार इमारत को बापू का गेस्ट-हाउस बनाया गया। खादी से सजी इस इमारत में महात्मा गांधी 8 से 10 सितम्बर 1929 तक रहे। 9 सितम्बर को इसी प्रांगण में प्रार्थना सभा हुई। जिसमें बापू के साथ मीराबेन, बा और अन्य आमंत्रित अतिथियों के साथ ही भोपाल नवाव परिवार सहित शामिल हुये।

नवाव शारजहाँ बेगम द्वारा समर गेस्ट-हाउस के रूप में बनवाये गये बेनजीर मैदान के प्रांगण में 10 सितम्बर को बापू की ऐतिहासिक जनसभा हुई। नवाव ने राष्ट्रवादी लोगों से इस सभा की जानकारी गोपनीय रखी थी। और यह प्रयास किया था कि गांधी जी के इस दौरे की जानकारी किसी को नहीं लग पाये। परन्तु प्रख्यात स्वतंत्रता-सेनानी, पत्रकार, कर्मवीर के संपादक पंडित माखनलाल चतुर्वेदी एवं श्री आगरकर ने प्रवेश प्रतिबंधित होने के बावजूद भी यात्रा की जानकारी प्राप्त कर ली और वे खण्डवा से ही बापू के साथ ट्रेन में सवार हो गये। उन्होंने गांधी जी के साथ जनसभा में भी भागीदारी की। इस सभा के बाद बापू काफिले के रूप में भोपाल से वापस जा रहे थे तभी ''मोड़ की बगिया'' में स्थानीय गुजराती वंड़िक मोड़ समाज द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। हरिजन समाचार पत्र के विकास के फंड हेतु 501 रुपये की धनराशि सम्मान स्वरूप भेंट की गई। यह राशि इसी दिन बेनजीर मैदान की जनसमा में प्राप्त धनराशि से बहुत अधिक थी। बापू इस सम्मान से बहुत अभिभूत हुए थे।

इसके बाद एक बार जब वे 1933 में हरिजन समाचार पत्र के उन्नयन हेतु देश भर में यात्रा हेतु निकले थे। उस वक्त 1933 में उन्होंने भोपाल रेलवे स्टेशन पर रूककर ट्रेन बदली थी। जब यह जानकारी प्रभातफेरी वालों को लगी कि बापू भोपाल से निकल रहे हैं तो बड़ी संख्या में लोगों ने भोपाल स्टेशन पहुंचकर उनका आत्मीय स्वागत किया था।

महात्मा गांधी का मध्यप्रदेश से अटूट लगाव था। वे मध्यप्रदेश के बुलावे को नकार नहीं पाते थे, इसी के चलते एक अन्य आमंत्रण के बाद वे सातवीं बार 20 नवम्बर से 8 दिसम्बर 1933 तक मध्यप्रदेश के कई शहरों में घूमें। उनका जगह-जगह पर अभूतपूर्व आत्मीय स्वागत हुआ। गांधी जी की आठवीं मध्यप्रदेश यात्रा इन्दौर में हुई। यहाँ उन्होंने 20 अप्रैल 1935 को सत्याग्रह और स्वराज का नया पाठ पढ़ाया और मालवा अंचल को सत्याग्रह में अग्रणी भूमिका निभाने का आव्हान किया। बताते हैं कि महात्मा गांधी मध्यप्रदेश में नौवीं बार जबलपुर-भेड़ाघाट की यात्रा पर पहुंचे। यहाँ उन्होंने फरवरी 1941 में सत्याग्रहियों और स्वतंत्रता सैनानियों को अहिंसा का पाठ पढ़ाया। गांधी जी का जबलपुर की माटी से बेहद लगाव था, इसीलिए वे एक साल बाद फिर 27 अप्रैल 1942 को मध्यप्रदेश में अपनी दसवीं यात्रा पर जबलपुर पहुंचे और स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान की।

महात्मा गांधी की मध्यप्रदेश यात्राओं की श्रृंखला और भी लंबी हो सकती है। वे कई अन्य बैठकों सामाजिक कार्यक्रमों में भी भागीदारी करने हेतु यहाँ आते रहे हैं। उक्त दस यात्राएं काफी चर्चित और जनमानस को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरित करने में अग्रणी मानी जाती है। गांधी जी की यात्राओं के दौरान मध्यप्रदेश के जो लोग उनके सम्पर्क में आये वे अपने-अपने तरह से संस्मरण, गीत, भजन सुनाते रहते हैं। गांधी उनकी यादों में आज भी जीवित है। वे उन्हें सदैव प्रेरणा देते रहते हैं। ऐसे ही एक प्रख्यात गांधीवादी विचारक काशीनाथ त्रिवेदी ने 1964 में बड़वानी में एक प्रयास शुरू किया और नर्मदा तट पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का पवित्र भस्मकलश युक्त स्मारक बनवाया। यहाँ गांधी जी के दर्शन करने हेतु हजारों लोग पहुंचते हैं। इस भस्मकलश स्मारक की स्थापना 30 जनवरी 1965 को की गई। लेकिन सरदार सरोवर बाँध परियोजना के डूब प्रभावित क्षेत्र में आने की वजह से इस स्मारक को 27 जुलाई 2017 को खुकरा बसाहट में विस्थापित कर दिया गया।

ऐसे ही एक प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक सुब्बाराव ने मध्यप्रदेश के मुरैना जिले की जौरा तहसील में महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना की। यह आश्रम उस समय चर्चा में आया जब तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह और

गांधीवादी विचारक सुब्बाराव की पहल पर चंबल के खूंखार डकैतों ने बड़ी संख्या में आत्म समर्पण कर दिया। डकैतों ने समारोह में न सिर्फ हथियार छोड़े बल्कि मुख्यमंत्री के समक्ष गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर अहिंसा का मार्ग अपनाया। डकैतों का यह आत्म समर्पण एक ऐतिहासिक घटना है। जिसमें जयप्रकाश नारायण की भूमिका को भी नहीं भुलाया जा सकता है। कहने को तो महात्मा गांधी के नाम पर मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले अंचल और गॉव में कई योजनायें, प्रकल्प एवं सेवा के कार्य संचालित हो रहे हैं। परंतु उनकी मध्यप्रदेश यात्रायें आज भी जनमानस को उनकी याद दिलाती है और उनके दिखाये सत्य अहिंसा, मितव्ययता, स्वच्छता और भाईचारे के मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करती हैं। (प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।